हवलदार गेंडाराम और अनोखा मदारी
(डबल सीक्रेट एजेन्ट 00½ राम-रहीम)
लेखक :- बिमल चटर्जी.
चित्रांकन :- त्रिशूल कॉमिको आर्ट.

र्मियों की छुट्टियों के पश्चात् जब स्कूल खुले तो राम-रहीम की मुलाकात अपने
नये सहपाठी देव-आनन्द के साथ हुई। देव जहां गम्भीर प्रकृति का लड़का था,
हीं आनन्द चंचल स्वभाव का किशोर था।

स साल की खेल-प्रतियोगिता में जूडो-कराटे की भी प्रतियोगिता रखी गई।
जिसमें राम अपने ग्रुप में प्रथम आया और आनन्द अपने ग्रुप में।

लेकिन राम और आनन्द ने फाइनल
ौर में एक-दूसरे से मुकाबला करने से
कार कर दिया। लिहाजा दोनों को संयु-
त रूप से उस प्रतियोगिता का विजेता
ोषित किया गया।
स प्रकार उनमें अभिन्न मित्रता हो गयी।

एक बार आनन्द स्कूल न जाकर अपने मुंहबोले काका
शंकर के घर पहुंचा और शंकर को काफी बीमार देखकर
वह उनकी पोती सरला के साथ मदारी का रूप धरकर
स्वयं तमाशा दिखाने चल दिया।

अपने स्कूल के निकट पहुंचकर उसने वहीं तमाशा दिखाने का निश्चय किया।
सुनो गुड़िया बहन! हम यहीं मजमा लगायेंगे, लेकिन तुम मुझे अब भइया कहकर सम्बोधित मत करना, वरना स्कूल के लड़के तो हमारी खिल्ली उड़ायेंगे ही, साथ ही हमें होने वाली कमाई से भी हाथ धोने पड़ेंगे।
ठीक है।
यदि आप इस कहानी का भरपूर मनोरंजन प्राप्त करना चाहते हैं तो "राम-रहीम और सदाबहार देवानन्द" अवश्य पढ़ें। अब आगे पढ़ें।

फिर आनन्द ने लोगों को एकत्रित करने के लिये ठेठ मदारियों की तरह आवाज लगानी आरम्भ कर दी।
आइये साहेबान, आइये। देखिये, यह बंदा आपकी सेवा में क्या-क्या खेल-तमाशे लेकर हाजिर हुआ है।
!!!
???

जल्दी ही वहां एक-एक कर अच्छी-खासी भीड़ इकट्ठी हो गई।
साहेबान, आज जो तमाशा मैं आप लोगों को दिखाऊंगा, वह आपने शायद जीवन में कभी नहीं देखा होगा।
डुग... डुग...

तभी स्कूल की भी छुट्टी की घण्टी बज उठी और छात्र स्कूल से बाहर निकलने लगे।
टन-टन-टन

राम भी रहीम के साथ स्कूल से बाहर निकला।
राम भइया, वह सामने भीड़ कैसी लगी है?
शायद कोई मदारी तमाशा दिखा रहा है। आओ, हम भी चलकर देखते हैं।

-रहीम भी उस भीड़ में सम्मलित हो गये।
???
चेली, तुम तैयार हो।
हां गुरुदेव!

इधर अज्जू भी अपने साथियों के साथ स्कूल से बाहर निकला।
अज्जू भइया, वह देखो, कोई मजमा लगा है।
लगता है, उस मरदूद के सितारे गर्दिश में आ चुके हैं, वरना वह यहां मजमा लगाने न आता...

...आओ मेरे साथ। आज हम उसी की कमाई से गुलछर्रे उड़ायेंगे।
हां-हां, चलो।
भी भीड़ में आ शामिल हुए।

शीघ्र ही बहुत से विद्यार्थियों के साथ देव भी तमाशा देखने वहां पहुंच गया।
अरे, वह लड़की तो सरला है, लेकिन शंकर काका की जगह उसके साथ वह दढ़ियल कौन है?

हां तो साहेबान, आप लोगों में से कोई समझदार आदमी मेरे पास आये, ताकि मैं अपना खेल आरम्भ कर सकूं।

लेकिन इससे पहले कि भीड़ में से कोई आगे बढ़ता, एक पुलिसकर्मी भीड़ को चीरता हुआ सबसे आगे आ पहुंचा।
लो, मैं दुनिया का सबसे समझदार आदमी तुम्हारे सामने हूं।
अरे, यह तो हवलदार गेंडाराम है। इस कम्बख्त को भी इसी समय यहां पहुंचना था।

खैर, आज मैं इसे ही सबके सामने मुर्गा बनाऊंगा।
अरे, यह गूंगे बने मेरा मुंह क्या ताक रहे हो ? बोलते क्यों नहीं कि तुम्हें एक समझदार आदमी की जरूरत क्यों है ?

अभी बताता हूं हवलदार जी! अभी बताता हूं। पहले बच्चों को आपके आगमन पर धन्य-वादस्वरूप तालियां तो बजाने दीजिये।
वाह! यह हुई न बात जल्दी से ब वाओ तालि

हां तो साहेबान, हुजूर की शान में पहले आप लोग तालियां बजा-इये, फिर देखिये इस मदारी का कमाल।

सबने तालियां बजाई-
थप-थप-थप

खामोशी छाने पर-
हां तो हुजूर, अब जरा आप थोड़ी देर के लिये मुर्गा बन जाइये।
क्या मतलब ?

देखिये हुजूर, समझदार आदमी मूर्खों की तरह प्रश्न नहीं करते। यदि आप वास्तव में समझदार हैं तो मुर्गा बन जाइये, वरना यहां मौजूद सभी लोग यही समझेंगे कि आप इस दुनिया के सबसे बड़े मूर्ख हवलदार हैं।
ओह!

र हवलदार गेंडाराम अपने आपको लोगों
नजरों में समझदार साबित करने के लिये
चाप मुर्गा बन गया।
हा-हा-हा!
हो-हो-हो!

अबे मदारी के बच्चे! जल्दी से अपना खेल शुरू कर। मुझसे ज्यादा देर तक इस हालत में नहीं रहा जायेगा।
अभी लीजिये हुजूर!

रहीम, न जाने क्यों मुझे यह मदारी कुछ जाना-पहचाना-सा लगता है।
मुझे तो नहीं लगता। ओह, समझा! जासूसी करते-करते अब तुम्हें हर व्यक्ति संदिग्ध और जाना-पहचाना-सा लगने लगा है।
रहीम का उत्तर सुन राम चुप हो गया।

चलो चेली, तुम जल्दी से हवलदार जी की पीठ पर चढ़ जाओ और इसे हाकों।
बहुत अच्छा गुरुदेव!

आंय! अब मुझ पर मुर्गी चढ़ी भी होगी।

अगले पल-
चल मुर्गे चल, आगे बढ़।
हाय, मुझे क्या मालूम था कि तमाशा देखने के चक्कर में मैं खुद ही तमाशा बन जाऊंगा।

लेकिन मजबूरी थी। हवलदार को मुर्गा बने-बने उछल-उछलकर आगे बढ़ना पड़ा।
साहेबान, क्या आप लोगों ने आज तक किसी इंसानी मुर्गे को अण्डा देते देखा है।
डुग... डुग...
नहीं!

तो लीजिये, आज देखिये कि हमारा यह मोटा मुर्गा कैसे बड़े-बड़े अण्डे देता है?
हे ईश्वर, यह मैं किस चक्कर में फंस गया।

ऐ मुर्गे, चल जल्दी से एक अण्डा दे।

सबकी नजर बचाकर, गेंडाराम की पीठ पर सवार सरला ने चुपचाप एक अण्डा पीछे आनन की फैली हुई हथेली पर टपका दिया।
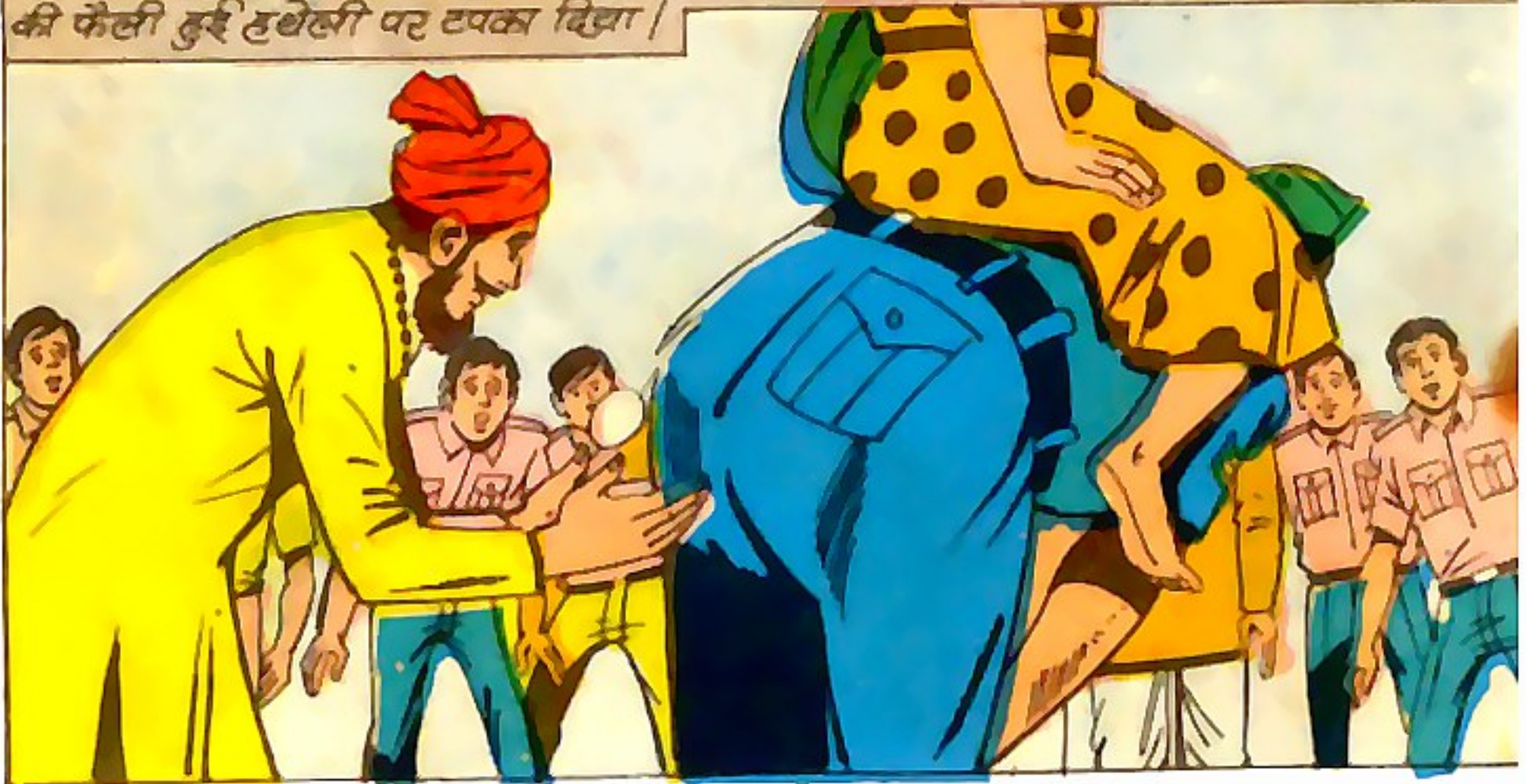
आनन्द की हथेली पर अचानक ही एक अण्डा देख सभी आश्चर्यचकित हो उठे तथा तालियां बजाने लगे।
वाह!
भई कमाल हो गया!
बहुत खूब! किसी इंसान को अण्डा देते तो मैंने आज पहली बार ही देखा है।
हाय! यह कम्बख्त मदारी मुझे कब तक मुर्गा बनाये अण्डे प्राप्त करता रहेगा।
दे बेटे मुर्गे, एक अण्डा और दे।
आनन्द ने कुछ अण्डे और उसी तरह प्राप्त किये...
...और सामने की पंक्ति में खड़े एक-एक व्यक्ति को वे अण्डे दिखाने लगा।
देख लीजिये साहेबान, ये कोई बनावटी अण्डे नहीं हैं। बिल्कुल ताज़े मुर्गे के ताज़े ही अण्डे हैं।
वाह!
विश्वास हो गया भाई!
अबे ओए मदारी, जल्दी से मुझे इस मुर्गे की योनि से मुक्त कर। मेरी कमर का कमरा बना जा रहा है।
ठीक है हुजूर, अब आप मुर्गे से इंसान बन जाइये। चेली, तुम नीचे उतर जाओ।

हाय! मुझसे तो अब सीधा भी नहीं खड़ा हुआ जा रहा है। सर चकरा रहा है।

बेचारा!

तो साहेबान, पसंद आया मेरा कमाल।

अबे ओए मदारी के बच्चे! अपने आपको बड़ा जादूगर बता रहा था। अब ला इसका पर्स, वरना तुझे बेभाव के इतने जूते पड़ेंगे कि सारी जादूगरी भूल जायेगा।
हां-हां, जल्दी से इसका पर्स बरामद करके दो।
शांत हो जाइये साहेबानो, शांत हो जाइये। मुझ जादूगर से कुछ नहीं छिपा। मैं अभी आप लोगों को बता दूंगा कि वह उड़ाया गया पर्स किस जेबकतरे के पास है।
तो जल्दी से बताओ।
तो सुनिये, वह पर्स इन हवलदार जी की जेब में मौजूद है।
हैं!
क्या?
अबे मदारी के बच्चे, तेरा दिमाग तो ठीक है। अगर नहीं है तो बता, अभी डंडे मार-मारकर तेरा दिमाग ठिकाने पर ला देता हूं।
मैंने जो कहा, वह सच है हुजूर! जेबकतरे आप ही हैं...

... साहेबानो, यदि आप लोगों को मेरी बात का विश्वास नहीं तो आप लोग इस मोटे हवलदार जी की तलाशी लेकर देख सकते हैं।
अबे मदारी के बच्चे, जुबान संभालकर बोल। किसमें हिम्मत है जो मेरी तलाशी ले।
तुम्हें तलाशी देनी ही होगी।
हां-हां, तुम्हें तलाशी देनी ही होगी।
नहीं, मैं अपनी तलाशी हरगिज नहीं दूंगा। मैं हवलदार गेंडाराम हूं।
अगर तुमने जेब नहीं काटी है तो तुम अपनी तलाशी क्यों नहीं देते?
सुनो मोटे हवलदार, यदि तुमने चुपचाप अपनी तलाशी नहीं दी तो हम सभी लड़के मार-मारकर तुम्हारा भुरता बना देंगे।
अरे बाप रे।

उफ! पता नहीं यह मदारी का बच्चा मुझसे किस जन्म का बदला ले रहा है। अब यदि मैं तलाशी नहीं देता हूं तो ये सब लड़के मेरे सिर का एक-एक बाल उड़ा देंगे।

फिर कुछ सोचकर-
ठीक है। मैं तलाशी देने के लिये तैयार हूं। परन्तु वायदा करो कि यदि मेरी जेब से वह पर्स नहीं मिला तो तुम्हें इस मदारी को पकड़-कर मेरे साथ थाने ले चलना होगा।
हमें मंजूर है।

फिर एक आदमी आगे बढ़कर गेंडाराम की तलाशी लेने लगा।
उंह! आज इस मदारी को मालूम पड़ेगा कि इसका पाला किस हवलदार से पड़ा है। सुअर को बाकी जादूगरी मैं थाने में सिखाऊंगा।

तभी-
यह रहा एक पर्स।
आईं!

यही है, यही है मेरा पर्स।

बिल्कुल जानता हूं हवलदार जी! लेकिन अपनी जान बचाने की आपको फीस देनी पड़ेगी।
म... मैं तैयार हूं।

फीस दो सौ रुपये होगी, जो आप मुझे सबके सामने बतौर इनामस्वरूप देंगे।
मुझे मंजूर है।

ठहरो भाइयो, साहेबानो ठहरो, यह हवलदार जी जेबकतरे नहीं हैं, बल्कि सचमुच के हवलदार जी ही हैं। कृपया आप लोग इनका भूर्ता मत बनाइये।
हैं!
क्या?

सुनिये जादूगर जी! यदि यह जेबकतरा नहीं है तो इन भाई साहब का पर्स इसकी जेब में कैसे आया?

यह भी मेरे जादू का

तो साहेबानो, हो जाये जादू के इस कमाल पर भी एक बार फिर ताली।

और सभी तालियां बजाने लगे।
थप - थप - थप
हाय! बेटा गेंडाराम, ये तालियां तेरी मूर्खता का उपहास उड़ा रही हैं। तू तमाशा भी बना और अब तुझे जेब से दो सौ रुपये भी मदारी को देने पड़ेंगे।

और मजबूरी में गेंडाराम को जेब से दो सौ रुपये निकालने ही पड़े।
आह! कितनी मुश्किल से ये दो सौ रुपये रिश्वत में कमाये थे।

सुनो भाइयो, आप लोगों के साथ-साथ मैं भी इस जादूगर के जादू का कायल हो गया हूं। अतः मैं खुश होकर इसे दो सौ रुपये इनाम में देता हूं।
हुर्रे!

लो भाई अपना इनाम।
हुजूर के बाल-बच्चे जियें और हुजूर का खून पीयें।

क्या मतलब ?
ज... जी, मेरा मतलब था, दुश्मन का खून पीयें।

हैं-हैं-हैं! तब ठीक है।

उसके बाद आनन्द, सरला के साथ अन्य लोगों व विद्यार्थियों से पैसा बटोरने लगा।
बेटा गेंडाराम, अब यहां से खिसक लेने में ही तेरी भलाई है। पता नहीं आज सुबह तू किसका मुंह देखकर घर से निकला था, जो तेरी यह भद्द उड़ी।

शीघ्र ही भीड़ छंट गई और आनन्द, सरला के साथ वहीं बैठकर इनाम में मिले रुपये-पैसे गिनने लगा।
आनन्द भइया, यह तो तुमने बाबा से भी ज्यादा रुपये इकट्ठे कर लिये।
अरे बाबा बाबा हैं और हम हम हैं।

पैसे गिनकर आनन्द ने छोटी-सी थैली में डाल लिये।
पूरे तीन सौ पिचहत्तर रुपये हैं इस थैली में। सच सरला, अब मैं यह थैली शंकर काका को दूंगा तो वे कितने खुश होंगे।
बहुत खुश होंगे आनन्द भइया! तुमने तो वास्तव में ही कमाल कर दिया।
तभी—
अरे नहीं?
???
मेरी थैली मुझे वापस कर दो लड़के, वरना अच्छा नहीं होगा।
बेटा, तुम्हारी भलाई इसी में है कि तुम इस लड़की के साथ चुपचाप यहां से दफा हो जाओ, वरना मैं और मेरे साथी तुम्हारी दाढ़ी-मूंछ उखाड़कर तुम्हारे हाथ में दे देंगे।

यह नकली दाढ़ी-मूंछ तो मैं खुद ही उतारकर तुम्हारे हाथ में दे दूंगा पुत्तर! बस, तुम चुपचाप थैली मेरे हाथ में दे दो।
क्या मतलब?
मतलब है यह!
तुम?
आनन्द!
हां, मैं! अब तुम बताओ कि मेरी थैली मुझे वापस करते हो या नहीं।
हरगिज नहीं।
अच्छा, तो चख मज़ा।
तड़ाक!
उफ!

अरे उल्लू के पट्ठो, खड़े-खड़े देख क्या रहे हो। बना दो साले का कीमा।
जरूर-जरूर!

जग्गू के दोस्त आनन्द पर झपटे, लेकिन—
खटाक!
आओ-आओ यारो, कीमा बनाने का गुर तुम्हें मैं सिखाऊंगा।

और फिर—
खटाक!
फटाक!
उफ!
हाय!
???

अरे, वह थैली कहां गई?

तभी—
क्या तुम इसी थैली को ढूंढ़ रहे हो जग्गू?
आंय! तुम?

तुम्हारी शराफत इसी में है अग्गू, कि तुम अपने साथियों को आनन्द से लड़ने से रोको और उन्हें लेकर चुपचाप यहां से चले जाओ, वरना...।
वरना तुम्हारी टांट पर इतने जूते पड़ेंगे कि तुम्हारी गंजी चांद देखकर तुम्हारी अम्मा भी तुम्हें पहचान नहीं पायेगी।

बकवास बंद करो और वह थैली मुझे दो।

प्यारे, लगता है, उस दिन की मार तुम्हें फिर याद दिलानी पड़ेगी।
तुम्हारी तो...!

लेकिन इससे पहले कि वह रहीम के निकट पहुंच पाता—
ढिशुम!
आह!

क्यों प्यारे, कैसा लगा मेरे मुक्के का स्वाद ?
हुं! तो तुम भी इन सुअरों की हिमायत के लिये यहां मौजूद हो...

उफ ! कम्बख्त ने एक ही लात में कई दांत हिला दिये ।

तभी-
जग्गू भइया, भाग चलो। इस समय इन शैतानों से पार पाना हम लोगों के वश की बात नहीं ।

भागो ।
अरे प्यारो, अपने उस्ताद को छोड़कर कहां जा रहे हो ?

देखते-देखते जग्गू के सभी साथी वहां से भाग गये।
प्यारे, तुम्हारे साथी तो बगल में दुम दबाकर भाग गये। अब तुम्हारा अपने बारे में क्या ख्याल है ?
उंह ! देख लूंगा तुम सबको एक - एक करके ।

जरूर देखना प्यारे और चश्मा लगाकर देखना, लेकिन कम-से-कम अपना और अपने साथियों के बस्ते तो लेते जाओ, वरना मम्मी-पापा से तुम्हें अलग मार पड़ेगी।
ओह!

अब्बू ने चुपचाप अपना और अपने साथियों के बस्ते उठाये..

...और वहां से चल पड़ा।
बेचारा! पूरे गधे का बोझ अकेले को ढोना पड़ रहा है।
हा-हा-हा!

कुत्तों ने आज बहुत अपमान किया है मेरा। मेरे साथियों पर से अब मेरा रोब हट जायेगा और वे मेरी खिल्ली भी अलग से उड़ायेंगे...

...कोई बात नहीं। यदि मैंने भी उनसे गिन-गिनकर बदला न लिया तो मेरा भी नाम जग्गू नहीं।

इधर—
लो आनन्द, अपनी थैली संभालो।
धन्यवाद बड़े भइया! दरअसल, यह कमाई किसी और की अमानत है...

...लेकिन दोस्तो, तुम लोग यहां कैसे रुक गये थे?
मुझे तुम्हारा चेहरा जाना-पहचाना-सा लगा था, इसलिये तुम्हारी असलियत जानने के लिये पास ही की एक दुकान पर रुककर तुम पर नजर रख रहा था।

और देव, तुम शायद सरला को पहचानकर रुक गये थे।
बिल्कुल!
चलो अच्छा हुआ। इस बहाने तुम सबसे मुलाकात हो गई...

... इस गुड़िया से मिलो। यह है मेरी और देव की मुंहबोली बहन सरला...
...और सरला, ये हैं हमारे स्कूल के नये मित्र राम और रहीम।

नमस्ते बड़े भइया।
नमस्ते बहन!

परिचय होने के बाद—
अरे आनन्द भाई, क्या तुम हमें यह नहीं बताओगे कि तुमने द्वन्द्व युद्ध के साथ-साथ यह जादू की कला कहां से और किससे सीखी?
जादूगर अपना भेद नहीं बताते बड़े भाई। फिर भी वक्त आने पर तुम्हें बता दूंगा। अच्छा, अब इजाजत दो...

...आओ देवू, चलें।
हां, चलो।

आओ रहीम, हम भी घर चलें।
हां, चलो।
राम रहीम अपने घर लौट गये।

मार्ग में आनन्द ने देव को बता दिया कि उसे मदारी का खेल दिखाने की जरूरत क्यों पड़ी। लिहाजा देव भी उनके साथ शंकर काका से मिलने उनके घर पहुंचा। शंकर काका देव से मिलकर और आनन्द की कारगुजारी सुनकर बहुत प्रसन्न हुए।
फिर कुछ देर शंकर काका के पास रुकने के पश्चात् आनन्द और देव वहां से रवाना हो गये।

मार्ग में आनन्द ने देव को ड्रॉप किया।
ओ.के. देव, बॉय, कल स्कूल में मिलेंगे।
ओ.के., बॉच-बॉय!

जब देव अपने घर पहुंचा—
अरे बेटा, तू आ गया। देख, घर में कौन आये हैं ?
कौन आये हैं मां ?

तेरे पिता लौट आये हैं बेटा... तेरे पिता लौट आये हैं।

क्या सच मां?

हां बेटा, आज ईश्वर ने हमारी सुन ली। चल, भीतर चलकर उनके पैर छू बेटा।

आहा!

कैसा है रे तू और तेरी पढ़ाई कैसी चल रही है? तेरी मां तो तेरी प्रशंसा करते नहीं थकती।
मां की आदत से तो आप अच्छी तरह वाकिफ हैं पिताजी! वैसे मैं अच्छा हूं और मेरी पढ़ाई भी अच्छी चल रही है...

...लेकिन पिताजी, इतने दिनों आप कहां रहे और हमारी खबर क्यों नहीं ली?
मैं पैसा कमाने की ललक में अपने छोटे से संसार से भटक गया था रे...

...लेकिन तू मेरे उस अतीत के बारे में मत पूछ। तू नहीं समझ पायेगा कि बीते हुए इन छः वर्षों में मैंने इस दुनिया में क्या खोया और क्या पाया...

... बस इतना जान ले कि इस दुनिया से एक भटका हुआ मुसाफिर वापस लौट आया है और अब वह अपने छोटे से परिवार को छोड़कर उस अंधेरी दुनिया में कभी वापस नहीं जायेगा।
क्या सच पिताजी ?
हां मेरे लाल!
पिता के लौट आने पर देव के घर में जैसे खुशियों की बहार आ गई।

अगले दिन जब देव ने स्कूल में आनन्द को अपने पिता के लौट आने के बारे में बताया तो वह भी बहुत खुश हुआ...

... और वह उसी दिन उसके पिता से मिला।

उस दिन से देव बहुत खुश रहने लगा और खूब दिल लगाकर पढ़ाई-लिखाई व खेल-कूद में भाग लेने लगा।
राम-रहीम व आनन्द भी खूब खुश थे...

...लेकिन जग्गू उर्फ जगदीश उन्हें खुश देखकर मन-ही-मन जला-भुना जा रहा था। वह जब कभी उन्हें एक साथ देखता, उसके सीने पर सांप लोट जाता।
बदला लूंगा, जरूर लूंगा। बस, कोई मौका हाथ लग जाये।

लेकिन कई महीने बीतने के बाद भी जग्गू को राम-रहीम और देव-आनन्द से बदला लेने का कोई मौका नहीं मिला, जबकि उसके स्कूल का हर विद्यार्थी उसके दुष्ट स्वभाव के कारण उससे भी कतराने लगा था। अध्यापकगण भी उससे नाखुश थे। लेकिन क्योंकि जगदीश एक धनवान पिता का बिगड़ा हुआ बेटा था, इसलिये कोई भी उसकी शिकायत प्रिंसिपल से नहीं करता था।
सब मुझसे कतराते हैं। कोई बात भी नहीं करना चाहता मुझसे...

तभी अध्यापक की एक विशेष घोषणा ने उसकी विचार तन्द्रा भंग कर दी।

मुद्रक : अशोका आफसेट वर्कस, दिल